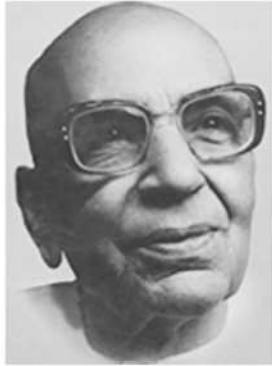


- |                              |                                  |
|------------------------------|----------------------------------|
| • डॉ. नगेन्द्र               | कुछ शब्द कुछ रेखाएँ              |
| • विष्णु प्रभाकर             | सृजन के सेतु                     |
| • सेठ गोविन्द दास            | स्मृतिकण                         |
| • कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' | भूले हुए चेहरे, जिन्दगी मुस्कराई |
| • कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' | दीप जले शंख बजे, माटी हो गई सोना |



- |                       |                              |
|-----------------------|------------------------------|
| • प्रकाश चन्द्र गुप्त | रेखाचित्र, पुरानी स्मृतियाँ, |
|                       | विशाखा                       |
| • विनय मोहन शर्मा     | रेखाएँ और रंग                |
| • देवेन्द्र सत्यार्थी | क्या गोरी क्या साँवरी,       |
|                       | रेखाएँ बोल उठीं              |
| • ओंकार शरद           | लंका महाराजिन                |
| • सत्यवती मलिक        | अमिट रेखाएँ                  |



- |                   |                    |
|-------------------|--------------------|
| • अज्ञेय          | आत्मनेपद           |
| • श्रीराम शर्मा   | सेवाग्राम की डायरी |
| • रवीन्द्र कालिया | सृजन के सहयात्री   |



- |                     |                  |
|---------------------|------------------|
| • फणीश्वरनाथ 'रेणु' | वन तुलसी की गन्ध |
|---------------------|------------------|



- |                     |                        |
|---------------------|------------------------|
| • रामविलास शर्मा    | विराम चिह्न            |
| • राहुल सांकृत्यायन | मेरे बचपन की स्मृतियाँ |
| • हरिवंश राय बच्चन  | नये पुराने झरोखे       |

### (vii) यात्रावृत्त

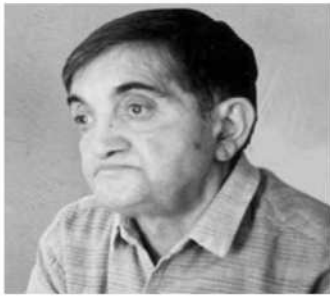
- | लेखक                | यात्रावृत्त   |
|---------------------|---|
| • भारतेन्दु         | सरयू पार की यात्रा, मेरी लखनऊ यात्रा।   |
| • सत्यदेव परिव्राजक | मेरी जर्मन यात्रा, यात्री मित्र, यूरोप की सुखद स्मृतियाँ, नयी दुनिया के मेरे अद्भुत संस्मरण।                                    |
| • कन्हैयालाल मिश्र  | हमारी जापान यात्रा।   |
| • शिवप्रसाद गुप्त   | पृथ्वी प्रदक्षिणा।  |
| • राहुल सांकृत्यायन | मेरी लद्दाख यात्रा, मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी यूरोप यात्रा, घुमक्कड़ शास्त्र, रूस में पच्चीस माह, एशिया के दुर्लभ भू-खण्डों में। |



- |          |   |
|----------|---|
| • यशपाल  | राहबीती, लोहे की दीवार के दोनों ओर।                         |
| • अज्ञेय | एक बूँद सहसा उछली, अरे यायावर रहेगा याद, बहता पानी निर्मला। |

- निर्मल वर्मा

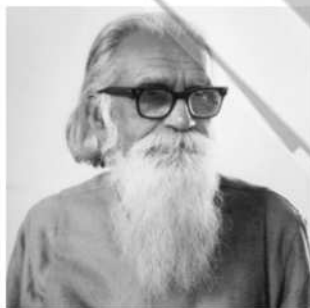
चीड़ों पर चाँदनी, हँसती घाटी दहकते  
निर्झर।



- डॉ. नगेन्द्र अप्रवासी की यात्राएँ।
- डॉ. रघुवंश हरी घाटी।
- कमलेश्वर आँखों देखा पाकिस्तान।
- रामधारीसिंह 'दिनकर' देश-विदेश।
- भगवत शरण उपाध्याय कलकत्ता से पीकिंग



- मनोहरश्याम जोशी क्या हाल है चीन के।
- काका कालेलकर हिमालय की यात्रा



- मुनि कान्ति सागर खोज की पगडण्डियाँ, खण्डहरों का वैभव

#### (viii) आलोचना

##### लेखक

##### आलोचना

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल चिन्तामणि, रसमीमांसा, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, जायसी ग्रन्थावली।

- नन्ददुलारे वाजपेयी

हिन्दी साहित्य-बीसवीं सदी, आधुनिक  
साहित्य, जयशंकर प्रसाद, राष्ट्रभाषा की  
समस्या।



- हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य का आदिकाल, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका, सूर साहित्य, हिन्दी साहित्य, मध्यकालीन बोध का स्वरूप।
- रामविलास शर्मा प्रगति और परम्परा, आस्था और सौन्दर्य, भाषा और समाज, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, नयी कविता और अस्तित्ववाद, मार्क्स और पिछड़े हुए समाज।
- डॉ. नगेन्द्र रस सिद्धान्त, साकेत एक अध्ययन, रीतिकाव्य की भूमिका, देव और उनकी कविता, नयी समीक्षा नये सन्दर्भ, शैली विज्ञान।
- डॉ. नामवर सिंह कहानी और नयी कहानी, छायावाद, कविता के नये प्रतिमान, दूसरी परम्परा की खोज। नयी कविता के प्रतिमान।
- लक्ष्मीकान्त वर्मा भाषा और संवेदना।
- रामस्वरूप चतुर्वेदी रीति विज्ञान।
- विद्यानिवास मिश्र



- डॉ. मैनेजर पाण्डेय साहित्य और इतिहास दृष्टि।
- प्रभाकर श्रोत्रिय कविता की तीसरी आँख।
- मलयज कविता से साक्षात्कार।

- निर्मला जैन रस सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र।



- नन्दकिशोर आचार्य साहित्य का स्वभाव।



- रांगेय राघव काव्य, कला और शास्त्र।



- शान्तिप्रिय द्विवेदी साहित्यिकी, हमारे साहित्य निर्माता।



- अमृतराय विचारधारा और साहित्य।
- निराला रवीन्द्र कविता कानन।
- विजयदेव नारायण साही लघु मानव के बदले कविता पर एक बहस।



- परमानन्द श्रीवास्तव दूसरा सौन्दर्यशास्त्र क्यों।

### (ix) निबन्ध

#### लेखक

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- बालकृष्ण भट्ट
- महावीरप्रसाद द्विवेदी

#### निबन्ध संग्रह

सुलोचना, परिहास वंचक, दिल्ली दरबार दर्पण, लीलावती।  
साहित्य सुमन, भट्ट निबन्ध माला (2 भाग)।  
रसज्ञ रंजन, साहित्य सीकर, कौटिल्य कुठार, बनिता विलास, कालिदास एवं उनकी कविता।



- पूर्णसिंह (6 निबन्ध) अध्यापक पूर्ण सिंह के निबन्ध
- श्यामसुन्दरदास गद्य कुसुमावली, रूपक रहस्य।



- रामचन्द्र शुक्ल
- सम्पूर्णानन्द

चिन्तामणि (2 भाग), रस मीमांसा।  
चिद्विलास, जीवन और दर्शन,  
ज्योतिर्विनोद, पृथ्वी से सप्तर्षि मण्डल।



- हजारीप्रसाद द्विवेदी
- विद्यानिवास मिश्र
- कुबेरनाथ राय

अशोक के फूल, विचार और वितर्क,  
विचार प्रवाह, आलोक पर्व, कल्पलता,  
कुटज।  
तुम चन्दन हम पानी, मैंने सिल पहुँचाई,  
छितवन की छाँह, कदम की फूली डाल,  
मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, हल्दी  
दूब, कौन तू फुलवा, बीनन हारी, कँटीले  
काँटों के आर-पार।  
रस आखेटक, प्रिया नीलकण्ठी, पर्ण  
मुकुट, लौह मृदंग, गंधमादन, कामधेनु,  
त्रेता का वृहद् साम।



- गुलाबराय

ठलुआ क्लब, फिर निराशा क्यों, मेरी  
असफलताएँ, मन की बातें।

### (x) हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ

पत्र-पत्रिका	सम्पादक
• उदन्त मार्तण्ड	पं. जुगल किशोर
• बंगदूत	राजा राममोहन राय
• बनारस अखबार	राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द'

- प्रजा हितैषी
- कवि वचन सुधा
- हरिश्चन्द्र चन्द्रिका
- बाला बोधिनी

राजा लक्ष्मण सिंह  
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र  
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र  
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र



- हिन्दी प्रदीप
- ब्राह्मण
- भारत मित्र

बालकृष्ण भट्ट  
प्रताप नारायण मिश्र  
बालमुकुन्द गुप्त



- आनन्द कादम्बिनी
- भारतेन्दु
- इन्दु
- प्रताप
- प्रभा
- कर्मवीर

बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'  
राधाचरण गोस्वामी  
अम्बिकाप्रसाद गुप्त, रूपनारायण पाण्डेय  
गणेश शंकर विद्यार्थी  
बालकृष्ण शर्मा नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी  
माखनलाल चतुर्वेदी



- मतवाला

निराला



- सुधा दुलारेलाल भार्गव
- हंस प्रेमचंद
- साहित्य संदेश बाबू गुलाबराय
- रूपाभ सुमित्रानन्दन पन्त
- आलोचना शिवदान सिंह चौहान
- नयी कविता डॉ. जगदीश गुप्त
- ज्ञानोदय कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर



- |                      |                        |
|----------------------|------------------------|
| • निकष               | धर्मवीर भारती          |
| • धर्मयुग            | धर्मवीर भारती          |
| • पराग               | कन्हैयालाल नंदन        |
| • कादम्बिनी          | राजेन्द्र अवस्थी       |
| • दस्तावेज           | विश्वनाथ प्रसाद तिवारी |
| • समालोचक            | डॉ. रामविलास शर्मा     |
| • कृति               | श्रीकान्त वर्मा        |
| • पहल                | ज्ञानरंजन              |
| • हंस (पुनर्प्रकाशन) | राजेन्द्र यादव         |



• वतमान साहित्य

विभूते नारायण



- साहित्य अमृत विद्यानिवास मिश्र



- बहुवचन अशोक वाजपेयी



- कथाक्रम शैलेन्द्र सागर



पाखी

अपूर्व जोशी



- तद्भव
- परख
- वागर्थ
- वाक्
- कथादेश

अखिलेश

कृष्ण मोहन

प्रभाकर श्रोत्रिय

सुधीश पचौरी

हरिनारायण



साप्ताहिक हिन्दुस्तान

मनोहर श्याम जोशी

## पुरस्कृत रचनाएँ

## ज्ञानपीठ पुरस्कार—

यह पुरस्कार साहू शांतिप्रसाद जैन ने 1961 में प्रारम्भ किया जिसमें भारत की सभी भाषाओं में श्रेष्ठ समझी जाने वाली रचना को पुरस्कृत किया जाता है। सभी भारतीय भाषाओं से तात्पर्य है— संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएँ। इसमें अब 11 लाख रुपए नकद, प्रशस्ति पत्र और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा प्रदान की जाती है।

## ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हिन्दी रचनाएँ

रचना	लेखक	वर्ष
1. चिदम्बरा	सुमित्रानन्दन पन्त	1968 ई.



2. उर्वशी

रामधारी सिंह 'दिनकर'

1972 ई.



3. कितनी नावों में कितनी बार

अज्ञेय

1978 ई.

4. यामा

महादेवी वर्मा

1982 ई.



5. सम्पूर्ण साहित्य

नरेश मेहता

1992 ई.

6. सम्पूर्ण साहित्य

निर्मल वर्मा (पंजाबी लेखक 1999 ई. गुरुदयाल सिंह के साथ)

7. सम्पूर्ण साहित्य

कुँवर नारायण

2005 ई.

8. सम्पूर्ण साहित्य

श्रीलाल शुक्ल (अमरकान्त के साथ)

2009 ई.

9. हिन्दी साहित्य

केदार नाथ सिंह

2013 ई.

10. हिन्दी साहित्य

कृष्णा सोबती

2017 ई.

## व्यास सम्मान—

यह ज्ञानपीठ पुरस्कार के बाद हिन्दी में प्राप्त दूसरा सबसे बड़ा सम्मान है, जो हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ रचना के लिए प्रतिवर्ष दिया जाता है। इस पुरस्कार को के. के. बिड़ला ने 1991 में प्रारम्भ किया था। इसमें 3 लाख रुपए नकद, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान किया जाता है।

## व्यास सम्मान प्राप्त रचनाएँ

रचना	लेखक	वर्ष
1. भारत के भाषा परिवार और हिन्दी	रामविलास शर्मा	1991 ई.
2. नीला चाँद (उपन्यास)	शिवप्रसाद सिंह	1992 ई.



3. मैं वक्त के हूँ सामने (काव्य)	गिरिजा कुमार माथुर	1993 ई.
4. सपना अभी भी (काव्य)	धर्मवीर भारती	1994 ई.



5. आत्मजयी (काव्य)	कुँवर नारायण	1955 ई.
6. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास (आलोचना)	रामस्वरूप चतुर्वेदी	1965 ई.
7. उत्तर कबीर, अन्य कविताएँ (काव्य)	केदारनाथ सिंह	1997 ई.
8. पाँच आँगनों वाला घर (उपन्यास)	गोविंद मिश्र	1998 ई.

पाँच आँगनों वाला घर  
गोविंद मिश्र



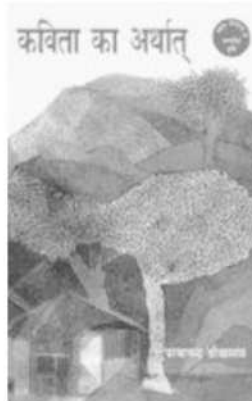
9. विश्रामपुर का सन्त (उपन्यास)	श्रीलाल शुक्ल	1999 ई.
10. पहला गिरिमिटिया (उपन्यास)	गिरिराज किशोर	2000 ई.
11. आलोचना का पक्ष (आलोचना)	रमेशचन्द्र शाह	2001 ई.
12. पृथ्वी का कृष्ण पक्ष (काव्य)	कैलाश वाजपेयी	2002 ई.
13. आवाँ (उपन्यास)	चित्रा मुद्गल	2003 ई.



14. कठगुलाब (उपन्यास)	मृदुला गर्ग	2004 ई.
-----------------------	-------------	---------



15. कथा सतीसर (उपन्यास)	चन्द्रकान्ता	2005 ई.
16. कविता का अर्थात् (आलोचना)	परमानन्द श्रीवास्तव	2006 ई.



17. समय सरगम	कृष्णा सोबती	2007 ई.
18. एक कहानी यह भी (आत्मकथा)	मन्नू भण्डारी	2008 ई.
19. इन्हीं हथियारों से (उपन्यास)	अमरकान्त	2009 ई.
20. फिर भी कुछ रह जायेंगे (काव्य)	विश्वनाथ तिवारी	2010 ई.
21. आम के पत्ते (काव्य संग्रह)	रामदरश मिश्र	2011 ई.
22. न भूतो न भविष्यति (उपन्यास)	नरेन्द्र कोहली	2012 ई.
23. व्योमकेश दरवेश (उपन्यास)	विश्वनाथ त्रिपाठी	2013 ई.
24. प्रेमचन्द की कहानियों का कालक्रम अनुसार अध्ययन	कमलकिशोर गोयनका	2014 ई.
25. क्षमा (काव्य संग्रह)	डॉ. सुनील जैन	2015 ई.
26. शमी का वृक्ष (काव्य) पद्म पंखुरी की धार से (उपन्यास)	सुरेन्द्र वर्मा	2016 ई.
27. दुःखम सुखम (उपन्यास)	ममता कालिया	2017 ई.

### विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. कवि 'जगनिक' की रचना का नाम है— उ.प्र. टी.ई.टी.
- (a) खुमान रासो (b) मृगावती  
(c) आल्हखण्ड (d) पद्मावत
- उत्तर—(c) आल्हखण्ड

**YUKTI ज्ञान**—कवि जगनिक आदिकाल के कवि थे उन्होंने परमाल रासो की रचना की जिसे आल्हखण्ड भी कहा जाता है।

2. 'पद्मावत' के रचनाकार हैं— उ.प्र. टी.ई.टी.
- (a) अमीर खुसरो (b) अब्दुर्रहमान  
(c) मोहम्मद इकबाल (d) जायसी
- उत्तर—(d) जायसी

**YUKTI ज्ञान**—पद्मावत के रचनाकार हैं मलिक मोहम्मद जायसी। यह आदिकाल में लिखा गया महाकाव्य है।

3. निम्नलिखित रचनाओं को कवियों के साथ सुमेलित कीजिए—

रचना	कवि
A. मृगावती	1. जायसी
B. मधुमालती	2. मुल्ला दाउद
C. चंदायन	3. उसमान
D. अखराबट	4. कुतुबन
	5. मंझन

कूट—

	A	B	C	D
(a)	2	3	5	4
(b)	3	2	1	4
(c)	4	5	2	1
(d)	1	2	3	4

उत्तर—(c)

**YUKTI ज्ञान**—मृगावती (कुतुबन), मधुमालती (मंझन), चंदायन (मुल्ला दाउद), अखराबट (जायसी) की रचनाएँ हैं।

4. इन कवियों को काल के आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए—

- (a) दादू, कबीर, सुन्दरदास, मलूकदास  
(b) मलूकराम, सुन्दरदास, कबीर, दादू  
(c) सुन्दरदास, मलूकदास, दादू, कबीर  
(d) कबीर, दादू, सुन्दरदास, मलूकदास

उत्तर—(d) कबीर, दादू, सुन्दरदास, मलूकदास।

**YUKTI ज्ञान**—कबीर (1938 ई.), दादू (1544 ई.), सुन्दरदास (1596 ई.), मलूकदास (1689 ई.)

5. इनमें से किस कवि ने 'लक्षण ग्रन्थ' नहीं लिखा—

- (a) देव (b) भूषण  
(c) पद्माकर (d) बिहारी

उत्तर—(d) बिहारी

**YUKTI ज्ञान**—बिहारी रीतिसिद्ध कवि थे। उन्होंने कोई लक्षण ग्रंथ नहीं लिखा। देव ने भवानी विलास, भाव विलास जैसे लक्षण ग्रंथ लिखे, भूषण ने शिवाबावनी नामक अलंकार ग्रंथ लिखा और पद्माकर ने पद्माभरण नामक अलंकार ग्रंथ लिखा।

6. 'कविप्रिया' के रचनाकार हैं—

- (a) केशव (b) भूषण  
(c) पद्माकर (d) मतिराम

उत्तर—(a) केशव

**YUKTI ज्ञान**—कविप्रिया केशव के द्वारा रचित रीतिग्रंथ है।

7. 'केशव कहि न जाय का कहिए' पंक्ति किस कवि की है? उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) सूर (b) केशव  
(c) तुलसी (d) रहीम

उत्तर—(c) तुलसीदास (विनय-पत्रिका से)

8. 'धर्मवीर भारती' किस सप्तक के कवि हैं? उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) तार सप्तक (b) दूसरा सप्तक  
(c) तीसरा सप्तक (d) चौथा सप्तक

उत्तर—(b) दूसरा सप्तक

9. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना को किस सप्तक में स्थान मिला है?

- (a) तार सप्तक (b) दूसरा सप्तक  
(c) तीसरा सप्तक (d) चौथा सप्तक

उत्तर—(c) तीसरा सप्तक

**YUKTI ज्ञान**—सर्वेश्वरदयाल सक्सेना तीसरा सप्तक (1959 ई.) के कवि हैं।



10. 'आवारा मसीहा' के रचनाकार हैं—

- (a) अमृतराय (b) विष्णु प्रभाकर  
(c) रामविलास शर्मा (d) प्रेमचन्द

उत्तर—(b) विष्णु प्रभाकर

**YUKTI ज्ञान**—आवारा मसीहा के रचनाकार हैं— विष्णु प्रभाकर, यह बंगला उपन्यास शरतचन्द्र की जीवनी है।

11. 'कबीर' किस काव्य धारा के कवि हैं?

- (a) ज्ञानमार्गी (b) प्रेममार्गी  
(c) कृष्णमार्गी (d) राममार्गी

उत्तर—(a) ज्ञानमार्गी

12. 'भारत-भारती' के रचयिता का नाम है—

- (a) मैथिलीशरण गुप्त (b) हरिऔध  
(c) नागार्जुन (d) दिनकर

उत्तर—(a) मैथिलीशरण गुप्त

**YUKTI ज्ञान**—भारत-भारती के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं। यह रचना देश प्रेम से ओतप्रोत कविताओं के कारण तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने जब्त कर ली थी।

13. 'मुक्त छन्द' के प्रणेता हैं—

उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) निराला (b) नागार्जुन  
(c) अज्ञेय (d) हरिऔध

उत्तर—(a) निराला

14. 'अन्धा युग' किसकी रचना है?

- (a) नरेश मेहता (b) मोहन राकेश  
(c) दुष्यन्त कुमार (d) धर्मवीर भारती

उत्तर—(d) धर्मवीर भारती

**YUKTI ज्ञान**—अन्धा युग धर्मवीर भारती का गीतिनाट्य है।

15. सखि वे मुझसे कहकर जाते, किस कवि की पंक्ति है?

- (a) सियारामशरण गुप्त (b) मैथिलीशरण गुप्त  
(c) हरिऔध (d) जगदीश गुप्त

उत्तर—(b) मैथिलीशरण गुप्त

**YUKTI ज्ञान**—सखि वे मुझसे कहकर जाते— यह पंक्ति मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'यशोधरा' की है।

16. 'कामायनी' में कितने सर्ग हैं?

उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) 10 (b) 12  
(c) 15 (d) 11

उत्तर—(c) 15

17. छायावादी महाकाव्य कौन-सा है?

उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) पल्लव (b) कामायनी  
(c) यामा (d) साकेत

उत्तर—(b) कामायनी

**YUKTI ज्ञान**—कामायनी (जयशंकर प्रसाद) छायावादी महाकाव्य है। साकेत की रचना द्वितीय युग में मैथिलीशरण गुप्त ने की। पल्लव (पंत) की और यामा (महादेवी वर्मा) की काव्य कृतियाँ हैं, महाकाव्य नहीं हैं।

18. खड़ी बोली हिन्दी का पहला महाकाव्य है—

उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) रामचरितमानस (b) साकेत  
(c) प्रियप्रवास (d) कामायनी

उत्तर—(c) प्रियप्रवास

**YUKTI ज्ञान**—खड़ी बोली हिन्दी के महाकाव्य प्रियप्रवास की रचना अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने 1914 ई. में की।

19. संस्कृत के वर्णवृत्तों का प्रयोग किस हिन्दी कवि ने अपने महाकाव्य में किया?

उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'  
(b) मैथिलीशरण गुप्त  
(c) जयशंकर प्रसाद  
(d) सुमित्रानन्दन पन्त

उत्तर—(a) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

**YUKTI ज्ञान**—संस्कृत के वर्णवृत्तों का प्रयोग अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने अपने महाकाव्य प्रियप्रवास में किया।

20. इन कवियों को काल के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित करें—

- (a) हरिऔध, प्रसाद, पन्त, निराला  
(b) निराला, प्रसाद, पन्त, हरिऔध  
(c) हरिऔध, प्रसाद, निराला, पन्त  
(d) पन्त, प्रसाद, निराला, हरिऔध

उत्तर—(c) हरिऔध, प्रसाद, निराला, पन्त

**YUKTI ज्ञान**—हरिऔध (1865 ई.), प्रसाद (1890 ई.), निराला (1897 ई.), पन्त (1900 ई.) — सही क्रम है।

## अध्याय 10. अपठित बोध



अपठित अवतरण को पढ़कर उसके अर्थ को समझना 'अपठित बोध' कहलाता है। अपठित अनुच्छेद में कुछ ऐसे शब्द भी हो सकते हैं जिनके अर्थ से आप सुपरिचित न हों, किन्तु आपको बिना घबराये हुए पूरे अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़कर यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि इस अवतरण का मूल विषय क्या है और उसमें क्या बात कही गई है। यदि आपने अपठित अवतरण के विचारों को समझ लिया तो अवतरण पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आसानी से दे सकेंगे। अपठित अवतरण को दो-तीन बार पढ़ने से अनुच्छेद में आए हुए भावों एवं विचारों को अपने शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता व्यक्ति में आ जाती है। इससे विद्यार्थियों की बोध शक्ति (समझ) एवं भाषा पर उनके अधिकार की भी परीक्षा हो जाती है।

अपठित अवतरण पर कई तरह के प्रश्न पूछे जा सकते हैं, यथा—

1. अपठित अवतरण का सार या भावार्थ
2. अपठित अवतरण से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर

3. अपठित अवतरण का शीर्षक
4. अपठित अवतरण में आए कुछ शब्दों के अर्थ
5. अपठित अवतरण के कुछ वाक्यों की व्याख्या

### अपठित अवतरण को हल करने की विधि

1. अवतरण को कम-से-कम दो बार ध्यान से पढ़ना चाहिए।
2. यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि अपठित अवतरण की विषय-वस्तु क्या है।
3. अवतरण के मूलभाव को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।
4. अवतरण को पढ़कर उसके प्रमुख विचारों को रेखांकित कर अलग से लिख लेना चाहिए।
5. अवतरण का केन्द्रीय भाव (Central Idea) ही उसका शीर्षक होता है।
6. अवतरण का शीर्षक यथासम्भव संक्षिप्त, सटीक एवं अवतरण से सुसम्बद्ध होना चाहिए।
7. पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अवतरण में से ही छाँटकर देने चाहिए अपनी ओर से व्यक्त विचार ठीक नहीं माने जाते।
8. उत्तर संक्षिप्त एवं सारगर्भित हो, भाषा सरल हो तथा उत्तरों में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
9. काले छपे अंशों की व्याख्या इस प्रकार करनी चाहिए जिससे उनका मन्तव्य पूरी तरह स्पष्ट हो जाए।

### अपठित अवतरण का सार लेखन

1. अपठित अवतरण का सार लेखन करने के लिए दिए गए अवतरण को कम-से-कम दो बार ध्यान से पढ़ना चाहिए।
2. सार लेखन के लिए विद्यार्थियों को अपनी सूझ-बूझ एवं विवेक से यह निर्णय करना होता है कि इस अवतरण के अनावश्यक अंश को हटा दें तथा आवश्यक अंग छूटने न पावें।
3. मूल अवतरण को पढ़कर उसके केन्द्रीय भाव को समझने का प्रयास करें।
4. अवतरण में जो वाक्य, अंश, बातें महत्वपूर्ण लगें उन्हें रेखांकित कर लें।
5. अवतरण का सार मूल अवतरण का लगभग एक-तिहाई होना चाहिए। अवतरण में आए शब्दों की संख्या जानने के लिए यदि एक पंक्ति में 15 शब्द हों तथा पंक्तियों की कुल संख्या 12 हो तो अवतरण की शब्द संख्या  $15 \times 12 = 180$  होगी। इसका सार लगभग 60 शब्दों में लिखा जाना चाहिए।
6. सार लेखन अपनी भाषा में होना चाहिए। भाषा सरल हो तथा उसमें कम-से-कम शब्दों में अधिक बात कह सकने की क्षमता भी होनी चाहिए।
7. अवतरण की जो बातें आपको आवश्यक लगें उन्हें अलग से लिख लेना चाहिए। यह सार का प्रथम प्रारूप है।
8. प्रथम प्रारूप को पूरा पढ़कर अनावश्यक अंश काट दें और जो अनावश्यक शब्द हों उन्हें निकाल दें। इस प्रकार दूसरा प्रारूप तैयार करें और यह सुनिश्चित कर लें कि इसमें सभी महत्वपूर्ण बातें आ गई हैं या नहीं, यदि कोई बात छूट गई हो तो जोड़ लें। यह दूसरा प्रारूप है।

9. 'सार' की शब्द संख्या गिनें और देखें कि यह मूल अवतरण की लगभग एक-तिहाई है या नहीं। यदि अधिक हो तो पुनः इनका सम्पादन कर अनावश्यक शब्द काट दें और कम हो तो कुछ और जोड़ दें। इस प्रकार अन्तिम प्रारूप तैयार करें।
10. सार रूप में लिखा गया अवतरण एक स्वतन्त्र, सुगठित और प्रवाहपूर्ण अनुच्छेद होना चाहिए।

### शीर्षक लेखन

1. मूल अवतरण का केन्द्रीय भाव ही अपठित का शीर्षक होता है।
2. शीर्षक संक्षिप्त, सारगर्भित एवं मूल अवतरण से जुड़ा होना चाहिए।
3. शीर्षक सरल एवं आकर्षक भी होना चाहिए।
4. शीर्षक अवतरण के मूल भाव या मूल विचार का द्योतक होना चाहिए।
5. शीर्षक अपठित अनुच्छेद के सभी विचारों का प्रतिनिधित्व करने पर श्रेष्ठ माना जाता है।
6. अवतरण को ध्यानपूर्वक दो तीन बार पढ़ने से यह पता चल जाता है कि इसका मूल विषय क्या है तथा उसी से शीर्षक बनाना चाहिए।
7. अवतरण के लिए जो शीर्षक समझ में आए उन्हें लिख लें तथा लिखे हुए शीर्षकों में से जो सर्वोत्तम लगे चुनाव शीर्षक के रूप में करें।

### गद्यांश 1

गाँधी जब स्वदेश लौटे उस समय भारत में बहुत से बड़े नेता मौजूद थे। फिर भी देश के दुखी मजदूर किसान और जनता मदद के लिए दक्षिण अफ्रीका के यशस्वी सेनानी गाँधी के ही पास आई। गाँधीजी द्वारा की गई कोशिश से बिहार में सौ वर्ष से चली आ रही नील की मजबूरन खेती की प्रथा खत्म हुई और गिरमिटिया या शर्तबन्ध मजदूरों को विदेशों में भेजना रोक दिया गया। अगर किसी क्षेत्र में लोगों को कोई अन्याय की शिकायत होती तो गाँधी उसे दूर करने के लिए लोगों को स्वयं प्रयत्न करने को कहते थे। गाँधी ने इस प्रकार अन्याय और जबरदस्ती के विरुद्ध जो भी आन्दोलन किए, उसकी प्रतिध्वनि सारे भारत में हुई। भारत में गाँधी ने जो भी जन-आन्दोलन चलाया, उन सबमें उनका तरीका एक ही था—शान्ति और दृढ़ता से अपनी बात कहना और उसके लिए अहिंसात्मक आन्दोलन करना। चम्पारन, खेड़ा और बारडोली के प्रसिद्ध आन्दोलनों के अलावा उन्होंने तीस वर्षों में भारत में चार बड़े आन्दोलनों का नेतृत्व किया। उन्होंने पूरे भारत का दौरा किया और लोगों से मिलकर अपनी आंखों से उनकी दशा देखी और उनकी समस्याओं को समझा।

जब भी वह सरकार के खिलाफ कोई आन्दोलन छेड़ते वह हजारों व्यक्तियों से भेंट करते थे और सारी सूचनाएँ और तथ्य एकत्र करने के लिए रोजाना अठारह-बीस घण्टे काम करते थे। उन्होंने हजारों सभाओं में भाषण दिए और लोगों को अनुशासन का पाठ पढ़ाया। गाँधी ने लोगों को अहिंसा का महत्व समझाया। उन्होंने कहा "देश के सामने एक दूसरा रास्ता भी है—तलवार खींचकर लड़ना। यदि यह तरीका सम्भव होता तो भारत के लोग अहिंसा के संदेश को नहीं सुनते। सिर्फ भाषणों और जुलूसों से हमें स्वराज नहीं प्राप्त होगा, उसके लिए हमें काम हासिल

करने की शक्ति और दृढ़ता दिखानी होगी। हमें ऐसे वीर सैनिक बनाना होगा जो मैदान छोड़कर भागते नहीं। हमें अपने प्राणों का बलिदान करने को तैयार रहना होगा। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए मर्दानगी जरूरी है। मारने के बजाय जरूरत हो तो खुद मर जाइए। आखिर किसी को मारने के लिए भी तो मरने की जोखिम उठानी पड़ती है, तो किसी की जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डालना कठिन क्यों लगे? दूसरों की जान लेने में बहादुरी नहीं है। बहादुरी है अपने सम्मान और स्वतन्त्रता के लिए मरने में।

गांधी की अहिंसा सेना में स्त्री, बच्चे और बूढ़े भी शामिल थे। बच्चों की सेना 'वानर सेना' कहलाती थी। गांधी अहिंसा पर इतने दृढ़ थे कि आन्दोलन में कहीं भी हिंसा हो जाने पर अपने सत्याग्रह को वापस ले लेते थे। वह छिपी लड़ाई नहीं खुली लड़ाई लड़ते थे और डंके की चोट पर घोषित कर देते थे कि वह क्या करने जा रहे हैं। वह अपने अनुयायियों से आशा करते थे कि अपने मन से भय, क्रोध, घृणा और प्रतिशोध की भावना निकाल दें।

गांधी लोगों को झूठी आशा कभी नहीं बंधाते थे। अपने सैनिकों को बता देते थे "आपको लाठियों और गोलियों का सामना करना पड़ेगा। जेल जाना होगा, आपकी सम्पत्ति जब्त हो सकती है और आपको फांसी पर भी चढ़ना पड़ सकता है। यह सब शान्त भाव से बिना विरोध किए सहना होगा।" उनके मन्त्र 'करेंगे या मरेंगे' का अर्थ था 'कष्टों को सहन करना' और वह जानते थे कि कष्टों के सहने से विरोधी हृदय पिघलेगा।

#### प्रश्न—

1. उक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्ष बताइए।
2. गांधीजी ने नील की खेती कहाँ बन्द करवाकर किसानों को अंग्रेजों के शोषण से मुक्ति दिलाई?
3. 'गिरमिटिया' का क्या अर्थ है?
4. गांधीजी जब भी सरकार के खिलाफ कोई आन्दोलन छेड़ते तब क्या करते थे?
5. गांधीजी ने स्वतन्त्रता पाने के लिए क्या आवश्यक माना?
6. गांधीजी के अनुसार बहादुरी क्या है?
7. गांधीजी की अहिंसक सेना में शामिल बच्चों की सेना को क्या कहा जाता था?
8. गांधीजी अपने अनुयायियों से क्या आशा करते थे?
9. गांधीजी अपने सैनिकों को क्या समझाकर आन्दोलन के लिए भेजते थे?
10. 'करेंगे या मरेंगे' का अर्थ वे क्या मानते थे?
11. गांधीजी कहाँ से स्वदेश लौटकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े थे?
12. भारत के लोग गांधीजी की ओर आशाभरी नजरों से क्यों देख रहे थे?

#### उत्तर—

1. उक्त अवतरण का शीर्षक है— 'अहिंसक सेनानी'।
2. गांधीजी ने बिहार के चम्पारण में होने वाली नील की खेती बन्द करवाकर किसानों को अंग्रेजों के शोषण से मुक्ति दिलवाई।
3. 'गिरमिटिया' शब्द 'एग्रीमेंट (Agreement)' से बना है। भारत से विदेशों

में जो मजदूर (कुली) 'एग्रीमेंट' या शर्तबन्दी (करार) के अन्तर्गत भेजे जाते थे, उन्हें 'गिरमिटिया' कहा जाता था।

4. गांधीजी जब भी अंग्रेजी सरकार के खिलाफ कोई आन्दोलन छेड़ते थे वह हजारों व्यक्तियों से भेंट करते थे और सारी सूचनाएं एकत्र करने लिए रोजाना अठारह-बीस घण्टे काम करते थे।
5. गांधीजी के अनुसार स्वतन्त्रता पाने के लिए हमें कठिन संघर्ष करना होगा, अपने प्राणों का बलिदान करने को तैयार रहना होगा। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए मर्दानगी (वीरता) जरूरी है।
6. गांधीजी के अनुसार अपने सम्मान और स्वतन्त्रता के लिए मरने में ही बहादुरी है, दूसरों की जान लेने में बहादुरी नहीं है।
7. गांधीजी की अहिंसक सेना में शामिल बच्चों की सेना को 'वानर सेना' कहा जाता था।
8. गांधीजी अपने अनुयायियों से आशा करते थे कि वे अपने मन से भय, क्रोध, घृणा और प्रतिरोध की भावना निकाल दें।
9. गांधीजी स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले सैनिकों (अनुयायियों) को यह बता देते थे कि तुम्हें लाठियों, गोलियों का सामना करना पड़ेगा, जेल जाना होगा, सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ सकता है तथा फांसी पर भी चढ़ाया जा सकता है। आप लोगों को यह सब बिना विरोध किए सहना होगा।
10. 'करेंगे या मरेंगे' का अर्थ था कष्टों को सहन करना।
11. गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से लौटकर भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े थे।
12. भारत के लोग गांधीजी की ओर आशा भरी नजरों से इसलिए देख रहे थे, क्योंकि उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करके भारतीयों को बहुत से अधिकार दिलाए थे।

#### गद्यांश 2

प्रेम की भाषा शब्द रहित है, नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की, भाषा भी शब्द रहित है। जीव का तत्व भी शब्दों से परे है। सच्चा आचरण—प्रभावशील आचरण न तो साहित्य के लम्बे व्याख्यानों से गढ़ा जा सकता है; न वेद की श्रुतियों के मिठे उपदेश से; न अंजील से; न कुरान से; न धर्मचर्चा से; न केवल सत्संग से। जीवन के अरण्य में धंसे हुए पुरुष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से सुनार के छोटे हथौड़े की मंद-मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है।

बर्फ का दुपट्टा बांधे हुए हिमालय इस समय तो अति सुन्दर, अति ऊँचा और अति रूप प्रत्यक्ष मालूम होता है, परन्तु प्रकृति ने अगणित शताब्दियों के परिश्रम से रेत का एक-एक परमाणु समुद्र के जल में डुबो-डुबोकर और उनको अपने विचित्र हथौड़े से सुडौल करके इस हिमालय के दर्शन कराए हैं। आचरण भी हिमालय की तरह एक ऊँचे कलश वाला मन्दिर है। यह वह आम का पेड़ नहीं जिसको मदारी एक क्षण में, तुम्हारी आंखों में मिट्टी डालकर, अपनी हथेली पर जमा दे। इसके बनने में अनन्त काल लगा है पृथ्वी बन गई, सूर्य बन गया, तारागण आकाश में दौड़ने लगे, परन्तु अभी तक आचरण के सुन्दर रूप

के पूर्ण दर्शन नहीं हुए। कहीं-कहीं उसकी अत्यल्प छटा अवश्य दिखाई देती है।

पुस्तकों में लिखे हुए नुस्खों से तो और भी अधिक बढ़हजमी हो जाती है। सारे वेद और शास्त्र भी यदि धोलकर पी लिए जायें तो भी आदर्श आचरण की प्राप्ति नहीं होती। आचरण प्राप्ति की इच्छा रखने वाले को तर्क-वितर्क से कुछ भी सहायता नहीं मिलती। शब्द और वेद तो साधारण जीवन के चोचले हैं। यह आचरण की गुप्त गुहा में प्रवेश नहीं कर सकते। वहाँ इनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। वेद इस देश के रहने वालों के विश्वासानुसार ब्रह्म-वाणी है, परन्तु काल व्यतीत हो जाने पर भी आज तक वे समस्त जगत् की भिन्न-भिन्न जातियों को संस्कृत भाषा न बुला सके—न समझा सके—न सिखा सके। यह बात हो कैसे? ईश्वर तो सदा मौन है। ईश्वरीय मौन शब्द और भाषा का विषय नहीं। वह केवल आचरण के कान में गुरु-मन्त्र फूंक सकता है। वह केवल ऋषि के दिल में वेद का ज्ञानोदय कर सकता है।

किसी का आचरण वायु के झोंके से हिल जाय, तो हिल जाय, परन्तु साहित्य और शब्द की गोलन्दाजी और आंधी से उसके सिर के एक बाल तक का बांका न होना एक साधारण बात है। पुष्प की कोमल पंखुड़ी के स्पर्श से किसी को रोमाञ्च हो जाय; जल की शीतलता से क्रोध और विषय-वासना शांत हो जाएं; बर्फ के दर्शन से पवित्रता आ जाये; सूर्य की ज्योति से नेत्र खुल जाएं—परन्तु अंगरेजी भाषा का व्याख्यान—चाहे वह कारलायल ही का लिखा हुआ क्यों न हो—बनारस के पण्डितों के लिए रामरोला ही है। इसी तरह न्याय और व्याकरण की बारीकियों के विषय में पण्डितों के द्वारा की गई चर्चाएं और शास्त्रार्थ संस्कृत-ज्ञान-हीन पुरुषों के लिए स्टीम इंजन के फफू-फफू शब्द से अधिक अर्थ नहीं रखते। यदि आप कहीं व्याख्यानों द्वारा, उपदेशों द्वारा, धर्मचर्चा द्वारा कितने ही पुरुषों और नारियों के हृदय पर जीवन-व्यापी प्रभाव पड़ा है, तो उत्तर यह है कि प्रभाव शब्द का नहीं पड़ता—प्रभाव तो सदा सदाचरण का पड़ता है। साधारण उपदेश तो हर गिरजे, हर मन्दिर और हर मस्जिद में होते हैं, परन्तु उनका प्रभाव तभी हम पर पड़ता है जब गिरजे का पादरी स्वयं ईसा होता है—मन्दिर का पुजारी स्वयं ब्रह्मर्षि होता है—मस्जिद का मुल्ला स्वयं पैगम्बर और रसूल होता है।

#### प्रश्न—

1. उक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।
2. किसकी भाषा शब्द रहित है?
3. 'प्रेम की भाषा शब्द रहित है' का आशय स्पष्ट कीजिए।
4. आचरण की तुलना किससे की गई है?
5. आदर्श आचरण की प्राप्ति किससे नहीं होती?
6. इस अवतरण में प्रयुक्त शैली है:  
(अ) विवरणात्मक, (ब) विवेचनात्मक, (स) गवेषणात्मक, (द) भावात्मक।
7. लेखक की भाषा किस प्रकार की है :  
(ब) लाक्षणिक, (ब) व्यंग्यात्मक, (स) साधारण, (द) संस्कृतनिष्ठ।
8. निम्न शब्दों के अर्थ बताइए:  
कपोल, व्याख्यान, गौरवान्वित, सदाचरण।

9. निम्न शब्दों के विलोम बताइए:

सदाचरण, सुन्दर, ऊँचा, शीतलता।

10. 'बाल तक बांका न होना' का क्या अर्थ है?

11. जीवन पर किसका प्रभाव पड़ता है?

12. 'साहित्य और शब्द की गोलन्दाजी' का क्या तात्पर्य है?

#### उत्तर—

1. उक्त अवतरण का शीर्षक है— 'आचरण की सभ्यता'।
2. लेखक के अनुसार प्रेम की भाषा शब्द रहित है। इसके साथ-साथ नेत्रों की, कपोलों की और मस्तक की भाषा भी शब्द रहित है।
3. "प्रेम की भाषा शब्द रहित है" का अभिप्राय यह है कि प्रेम को शब्दों से व्यक्त न करके अन्य प्रकारों से व्यक्त किया जाता है।
4. आचरण की तुलना एक ऊँचे कलश वाले मन्दिर से की गई है जो हिमालय की भांति दूर से ही चमकता है।
5. वेदशास्त्रों को धोलकर पी लेने (कण्ठस्थ कर लेने) से आदर्श आचरण की प्राप्ति नहीं हो सकती है।
6. इस अवतरण में प्रयुक्त शैली है—(द) भावात्मक।
7. लेखक की भाषा है—(अ) लाक्षणिक।
8. शब्दों के अर्थ इस प्रकार हैं :  
कपोल = गाल, व्याख्यान = भाषण, गौरवान्वित = गौरव से युक्त, सदाचरण = अच्छा आचरण।
9. विलोम शब्द इस प्रकार हैं :  
(i) सदाचरण = दुराचरण, (ii) सुन्दर = असुन्दर (कुरूप), (iii) ऊँचा = नीचा, (iv) शीतलता = उष्णता।
10. 'बाल तक बांका न होना' का अर्थ है—कुछ भी हानि न होना।
11. जीवन पर सदाचरण का प्रभाव पड़ता है, शब्द का नहीं।
12. साहित्य और शब्द की गोलन्दाजी का तात्पर्य है किसी व्यक्ति के आचरण को बदलने के लिए साहित्य एवं नीति के शब्दों द्वारा बार-बार प्रहार करना।

**निर्देश—** निम्न अवतरणों को ध्यान से पढ़कर उन पर पूछे गए बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर का चयन कीजिए।

#### गद्यांश 3

प्रेम और श्रद्धा में अन्तर यह है कि प्रेम स्वाधीन कार्यों पर उतना निर्भर नहीं, कभी-कभी किसी का रूप मात्र, जिसमें उसका कुछ भी हाथ नहीं, उसके प्रति प्रेम उत्पन्न होने का कारण होता है पर श्रद्धा ऐसी नहीं है। किसी की सुन्दर आँख या नाक देखकर उसके प्रति श्रद्धा नहीं उत्पन्न होगी, प्रीति उत्पन्न हो सकती है। प्रेम के लिए इतना ही बस है कि कोई मनुष्य हमें अच्छा लगे, पर श्रद्धा के लिए आवश्यक यह है कि कोई मनुष्य किसी बात में बढ़ा हुआ होने कारण हमारे सम्मान का पात्र हो। श्रद्धा का व्यापार-स्थल विस्तृत है, प्रेम का एकान्त। प्रेम में घनत्व अधिक है और श्रद्धा में विस्तार। किसी मनुष्य से प्रेम रखने वाले दो ही एक मिलेंगे, पर उस पर श्रद्धा रखने वाले सैकड़ों-हजारों, लाखों क्या



करोड़ों मिल सकते हैं। सच पूछिए तो इसी श्रद्धा के आश्रय से उन कर्मों के महत्व का भाव दृढ़ होता रहता है जिसे धर्म कहते हैं और जिनमें मनुष्य समाज की स्थिति है। कर्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिए बार-बार कर्ता ही की ओर आंख उठती है। कर्मों से कर्ता की स्थिति को जो मनोहरता प्राप्त हो जाती है उस पर मुग्ध होकर बहुत से प्राणी उन कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्ता अपने सत्कर्म द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है। जिस समाज में किसी ज्योतिष्मान शक्ति केन्द्र का उदय होता है, उस समाज में भिन्न-भिन्न हृदयों से शुभ भावनाएं मेघ-खण्डों के समान उठकर तथा एक ओर एक साथ अग्रसर होने के कारण परस्पर मिलकर इतनी घनी हो जाती हैं कि उनकी घटा-सी उमड़ पड़ती है और मंगल की ऐसी वर्षा होती है कि सारे दुःख और क्लेश बह जाते हैं।

**1. इस अवतरण का उपयुक्त शीर्षक है:**

- (a) श्रद्धा और प्रेम (b) श्रद्धा और भक्ति  
(c) प्रेम और भक्ति (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) श्रद्धा और भक्ति

**2. श्रद्धा के कारण किन कर्मों का महत्व बढ़ जाता है?**

- (a) जिन्हें अधर्म कहा जाता है (b) जिन्हें धर्म कहा जाता है।  
(c) जिन्हें सत्पुरुष करते हैं। (d) जिन्हें दुर्जन करते हैं।

उत्तर—(b) जिन्हें धर्म कहा जाता है।

**3. कर्म का सबसे बड़ा स्मारक लेखक किसे मानता है?**

- (a) श्रद्धा को (b) धर्म को  
(c) कर्ता को (d) इन सबको

उत्तर—(c) कर्ता को

**4. ज्योतिष्मान शक्ति केन्द्र का अभिप्राय है :**

- (a) ज्ञानमार्गी (b) प्रेममार्गी  
(c) कृष्णमार्गी (d) राममार्गी

उत्तर—(b) प्रेममार्गी

**5. अपने सत्कर्म द्वारा मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का केन्द्र कौन बन जाता है।**

- (a) कर्ता (b) भक्त  
(c) श्रद्धालु (d) प्रेमी

उत्तर—(c) श्रद्धालु

**गद्यांश 4**

हमारे विशाल देश में हिमालय की अनन्त हिमराशि वाले ग्लेशियरों ने जिन नदियों को जन्म दिया है, उनमें गंगा और यमुना नाम की नदियाँ हमारे जीवन की धमनियों की तरह रही हैं, उनकी गोद में हमारे पूर्वजों ने सभ्यता के प्रांगण में अनेक नये खेल खेले। उनके तटों पर जीवन का जो प्रवाह प्रचलित हुआ, वह आज तक हमारे भूत और भावी जीवन को सींच रहा है। भारत हमारा देश है और हम उसके नागरिक हैं यह एक सच्चाई हमारे रोम-राम में बिंधी हुई है। नदियों की अन्तर्वेदी में पनपने

वाले आदि युग के जीवन पर हम अब जितना अधिक विचार करते हैं हमको अपने विकास और वृद्धि की सनातन जड़ों का पृथ्वी के साथ सम्बन्ध उतना ही अधिक घनिष्ठ जान पड़ता है। हमारे धार्मिक पर्वों पर लाखों लोग नदी और जलाशयों के तटों पर एकत्र होते हैं। पृथ्वी के एक-एक जलाशय और सरोवर को भारतीय भावना ने ठीक प्रकार से समझने का प्रयत्न किया, उनके साथ सौहार्द का भाव उत्पन्न किया जो हर एक पीढ़ी के साथ नये रूप में बँधा रहा, किन्तु आज स्थिति बड़ी विचित्र और एक सीमा तक चिन्ताजनक हो गई है। हमारी औद्योगिक क्रान्ति ने इन्हें प्रदूषित कर विषैला बना दिया है। जीवनदायिनी नदियाँ आज प्राणघातिनी होती जा रही हैं। मिल-बैठकर सोचने की आवश्यकता है कि क्या करें कि ये पुनः जीवनदायिनी हों और उन सोची हुई योजनाओं को अमल में लाने की भी आवश्यकता है। (CTET 2015)

**1. गंगा-यमुना को जल कहाँ से मिलता है?**

- (a) अनन्त जलराशि से (b) मानसरोवर से  
(c) ग्लेशियरों से (d) हिमालय से  
उत्तर—(c) ग्लेशियरों से

**2. लेखक के अनुसार हमारी सभ्यता का जन्म हुआ है।**

- (a) नदियों की गोद में (b) गंगा-यमुना में  
(c) प्रकृति के प्रांगण में (d) हिमालय में

उत्तर—(a) नदियों की गोद में

**3. स्थिति चिन्ताजनक क्यों हो गई है?**

- (a) नदियाँ कम हो गई हैं (b) नदियाँ वेग से बहने लगी हैं।  
(c) नदियाँ बाढ़ लाने लगी हैं। (d) नदियाँ प्रदूषित हो गई हैं।

उत्तर—(d) नदियाँ प्रदूषित हो गई हैं।

**4. 'जीवनदायिनी' का विलोम है।**

- (a) प्राणघातिनी (b) अजीवनदायिनी  
(c) प्राणान्तक वाहिनी (d) जीवप्रदायिनी

उत्तर—(a) प्राणघातिनी

**5. 'औद्योगिक' शब्द का मूल शब्द है**

- (a) उद्योग (b) औद्योग  
(c) उद्योग (d) योगिक

उत्तर—(c) उद्योग

**6. जिसका कोई अन्त न हो उसे कहते हैं**

- (a) आनन्द (b) अनन्त  
(c) अखण्ड (d) असीम

उत्तर—(b) अनन्त

**गद्यांश 5**

आसमान में मुक्का मारना कोई बुद्धिमानी का काम नहीं समझा जाता। बिना लक्ष्य के तर्क करना भी बुद्धिमानी नहीं है। हमें भली-भाँति समझ लेने की आवश्यकता है कि हमारा लक्ष्य क्या है? हम जो कुछ प्रयत्न करने जा रहे हैं वह किसके लिए है? साहित्य हम किसके लिए रचते हैं, इतिहास और दर्शन क्यों लिखते और पढ़ते हैं? राजनीतिक आन्दोलन

किस महान उद्देश्य की सिद्धि के लिए करते हैं? मनुष्य ही वह बड़ी चीज है जिसके लिए सब यह किया करते हैं। हमारे सब प्रयत्नों का एक लक्ष्य है, मनुष्य वर्तमान दुर्गति के पंक से उद्धार पाए और भविष्य में सुख और शान्ति से रह सके। वह शास्त्र, वह ग्रन्थ, वह कला, वह नृत्य, वह राजनीति, वह समाज-सुधार जंजाल-मात्र है जिससे मनुष्य का भला न होता हो। मनुष्य आज हाहाकार के भीतर त्राहि-त्राहि पुकार रहा है। हमारे राजनीतिक और सामाजिक सुधार से अन्न-वस्त्र की समस्या सुलझ सकती है फिर भी मनुष्य सुखी नहीं बनेगा। उसे सिर्फ अन्न-वस्त्र से ही सन्तोष नहीं होगा। इसके बाद भी उसका मनुष्य बनना बाकी रह जाता है। साहित्य वही काम करता है। मनुष्य नामक प्राणी तो पशुओं में ही एक विकसित प्रजाति है और यदि मनुष्यता के गुण और मूल्य उसमें नहीं हैं, तो वह मनुष्य नामक पशु ही है, मनुष्य नहीं। भोजन करना, सोना और वंश-वृद्धि जैसे काम प्रकृति के द्वारा तय हैं, सच्चा मानव बनने के लिए उसे जो दृष्टि चाहिए उसे पाने में साहित्य सहायक हो सकता है।

1. आसमान में मुक्का मारने से आशय है :

- (a) लोगों का ध्यान आकर्षित करना
- (b) अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना
- (c) वीरतापूर्ण कार्य करना
- (d) निरर्थक कार्य करना

उत्तर—(d) निरर्थक कार्य करना

2. बुद्धिमानी नहीं है :

- (a) निरुद्देश्य तर्क करना
- (b) राजनीतिक आन्दोलन करना
- (c) आसमान में मुक्का मारना
- (d) निष्फल कार्य करना

उत्तर—(c) आसमान में मुक्का मारना

3. साहित्य, कला, नृत्य आदि व्यर्थ हैं यदि उनसे :

- (a) मनुष्य का हित न हो सके
- (b) लक्ष्य न पाया जा सके
- (c) धन न कमाया जा सके।
- (d) यश प्राप्त न हो सके।

उत्तर—(a) मनुष्य का हित न हो सके।

4. अन्न वस्त्र आदि की समस्याएँ हल हो सकती हैं :

- (a) अच्छे साहित्य से
- (b) आवश्यकताओं की पूर्ति से
- (c) सामाजिक सुधारों से
- (d) राजनीतिक आन्दोलनों से

उत्तर—(b) आवश्यकताओं की पूर्ति से।

5. मनुष्य के लिए प्रकृति द्वारा तय कामों में नहीं है :

- (a) अन्न-वस्त्र की पूर्ति
- (b) वंश वृद्धि
- (c) सोना
- (d) भोजन करना

उत्तर—(c) सोना

6. मनुष्य एक पशु ही है यदि उसमें :

- (a) साहित्य के प्रति रुचि न हो
- (b) मानवीय मूल्य न हों
- (c) सम्पन्नता न हो
- (d) सामाजिकता न हो

उत्तर—(b) मानवीय मूल्य न हों

7. दिए गए शब्दों में से अर्थ की दृष्टि से भिन्न शब्द छाँटिए।

- (a) निशाना
- (b) लक्ष्य

(c) उद्देश्य

(d) उद्धार

उत्तर—(d) उद्धार

8. अनुच्छेद में 'जंजाल' शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है?

- (a) त्राहि-त्राहि
- (b) झंझट
- (c) समस्या
- (d) प्रयत्न

उत्तर—(b) झंझट

9. 'बुद्धिमानी' शब्द है

- (a) विशेषण
- (b) क्रिया
- (c) संज्ञा
- (d) सर्वनाम

उत्तर—(c) संज्ञा

### गद्यांश 6

यह तो आप जानते हैं कि पृथ्वी प्रारम्भ में आग का गोला थी। मुझे ठीक-ठीक नहीं पता कि ऐसी आग में मुझ पानी का जन्म कैसे हुआ। लगता यह है कि हमारी पृथ्वी ज्यों-ज्यों ठण्डी होती गई तो उसमें मौजूद गैसों में क्रियाएँ हुईं। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की रासायनिक क्रियाओं से मेरा जन्म हुआ है। इन दोनों ने अपना अस्तित्व मिटाकर मुझे बनाया। पहले मैं पृथ्वी के ऊपर के भाप रूप में ही था। फिर जाने क्या हुआ कि मैं ठोस बर्फ बन गया। कल्पना करो चारों ओर बर्फ ही बर्फ। जब सूर्य की किरणें हम पर पड़तीं तो चारों ओर सौन्दर्य बिखर पड़ता। लाखों वर्षों तक इस रूप में रहने के बाद मैं फिसलने लगा क्योंकि बर्फ के ही दबाव से निचली परत पिघलने लगी थी। फिसलकर हम पहुँचे सागर में। वहाँ की तो बात ही निराली थी। वहाँ अब तक हमसे पहले पहुँचे पानी में छोटे-छोटे जीव तैरने लगे थे। घोंघे, मछलियाँ और कछुवे भी। धीरे-धीरे सृष्टि का विस्तार हुआ। जल के बाद स्थल में जीव बनने लगे और आज आप उसी शृंखला के अंग हैं और अपने को मनुष्य कहते हैं।

(CTET 2014)

1. यह आत्मकथा किसकी है?

- (a) बर्फ की
- (b) पानी की
- (c) मनुष्य की
- (d) पृथ्वी की

उत्तर—(b) पानी की

2. सबसे पहले जीवधारी कहाँ पैदा हुए?

- (a) बर्फ में
- (b) भाप में
- (c) जल में
- (d) स्थल में

उत्तर—(c) जल में

3. बर्फ क्यों फिसलने लगी थी?

- (a) अपनी गर्मी से पिघल रही थी
- (b) बर्फ के बोझ और दबाव से निचली परत पिघल रही थी
- (c) पिघला दिया था
- (d) समुद्र की लहरें आ गई थीं।

उत्तर—(b) बर्फ के बोझ और दबाव से निचली परत पिघल रही थी

4. मनुष्य किस शृंखला का अंग है?

- (a) जीवधारियों की शृंखला का
- (b) जलजीवों की शृंखला का

- (c) प्राकृतिक शृंखला का (d) प्राकृतिक परिवर्तन शृंखला का  
उत्तर—(a) जीवधारियों की शृंखला का

5. चारों और सौन्दर्य ..... पड़ता।

रिक्त स्थान के लिए शब्द होगा।

- (a) चमक (b) दमक  
(c) बिफर (d) बिखर

उत्तर—(d) बिखर

6. कौन-से वाक्य में संज्ञा बहुवचन में नहीं है?

- (a) घर बनने लगे हैं। (b) जीव जल में तैर रहे हैं।  
(c) घोड़े चल रहे हैं। (d) कछुवे की चाल देखें

उत्तर—(d) कछुवे की चाल देखें

गद्यांश 7

अधिकतर लोगों की यही शिकायत होती है कि उन्हें पनपने के लिए सटीक माहौल व संसाधन नहीं मिल पाए, नहीं तो आज वे काफी आगे होते और आज भी ऐसे कई लोग हैं, जो संसाधन और स्थितियों के अनुकूल कभी होने के इन्तजार में खुद को रोके हुए हैं। ऐसे लोगों के लिए ही किसी विद्वान ने कहा है—इन्तजार मत कीजिए और आगे सब बेहतर होता जाएगा। जिनके इरादे दृढ़ होते हैं, वे सीमित संसाधनों में भी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर पाते हैं।

नारायणमूर्ति ने महज दस हजार रुपये में अपने छः दोस्तों के साथ इन्फोसिस की शुरुआत की और आज इन्फोसिस आईटी के क्षेत्र की एक बड़ी कम्पनी है। करौली टैक्स, पहले अपने दाएँ हाथ से निशानेबाजी करते थे, मगर उनका दायाँ हाथ एक विस्फोट में चला गया। फिर उन्होंने अपने बाएँ हाथ से शुरुआत की और 1948 व 1950 में ओलम्पिक स्वर्ण पदक अपने नाम किया। लिओनार्दो द विंची, रवीन्द्रनाथ टैगोर, टॉमस अल्वा एडिसन, टेलीफोन के आविष्कारक ग्राहम बेल वॉल्ट डिज्नी—ये सब अपनी शुरुआती उम्र में डिस्लेक्सिया से पीड़ित रह चुके हैं, जिसमें पढ़ने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, फिर भी ये सभी अपने-अपने क्षेत्र के शीर्ष पर पहुँचे। अगर ये लोग भी इसी तरह माहौल या संसाधनों की शिकायत और इन्तजार करते, तो क्या कभी उस मुकाम पर पहुँच पाते, जहाँ वे मौजूद हैं? अगर हमने अपना लक्ष्य तय कर लिया है, तो हमें उस तक पहुँचने की शुरुआत अपने सीमित संसाधनों से ही कर देनी चाहिए। किसी इन्तजार में नहीं रहना चाहिए। ऐसे में इन्तजार करना यह दर्शाता है कि हम अपने लक्ष्य को पाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध नहीं हैं। इसलिए हमें अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत कर जुट जाना होगा। इन्तजार करेंगे तो करते रह जाएँगे।

1. 'समय एकदम अनुकूल कभी नहीं होता' यहाँ 'एकदम' का अर्थ है।

- (a) पूर्णतः (b) अचानक  
(c) तुरन्त (d) तत्काल

उत्तर—(a) पूर्णतः

2. 'हमें अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत कर जुट जाना होगा।' उपयुक्त वाक्य से बना संयुक्त वाक्य होगा।

- (a) हमें इच्छाशक्ति को मजबूत करना है इसलिए जुट जाना होगा।  
(b) यदि हमें अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत करना है तो जुट जाना होगा।  
(c) हमें अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत करना होगा और जुट जाना होगा।  
(d) हमें जुट जाना होगा और फिर इच्छाशक्ति को मजबूत करना होगा।  
उत्तर—(c) हमें अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत करना होगा और जुट जाना होगा।

3. 'डिस्लेक्सिया' शब्द है :

- (a) देशज (b) आगत  
(c) तत्सम (d) तद्भव

उत्तर—(b) आगत

4. 'ऐसे लोगों के लिए ही किसी विद्वान ने कहा है' रेखांकित अंश का संकेत है :

- (a) प्रतिकूल स्थितियों को अनुकूल बनाते लोग  
(b) दृढ़ इरादों वाले लोग  
(c) अनुकूल परिस्थितियों में बड़े लोग  
(d) अनुकूल परिस्थितियों की प्रतीक्षा कर रहे लोग

उत्तर—(a) प्रतिकूल स्थितियों को अनुकूल बनाते लोग

5. नारायणमूर्ति, ग्राहम बेल आदि के उदाहरण क्यों दिए गए हैं?

- (a) डिस्लेक्सिया से ग्रस्त होने के कारण  
(b) सीमित संसाधन होने के कारण  
(c) सफल अमीन होने के कारण  
(d) प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सफलता पाने के कारण

उत्तर—(d) प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सफलता पाने के कारण

6. 'इन्तजार करेंगे तो करते रह जाएँगे' कथन का तात्पर्य है :

- (a) स्थिति अनुकूल होने की प्रतीक्षा करना व्यर्थ है  
(b) प्रतीक्षा करने के लिए धैर्य होना आवश्यक है  
(c) प्रतीक्षा कभी समाप्त नहीं होती  
(d) प्रतीक्षा करना ठीक नहीं

उत्तर—(a) स्थिति अनुकूल होने की प्रतीक्षा करना व्यर्थ है।

7. बच्चों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए सर्वश्रेष्ठ विधि है :

- (a) पढ़ी गई कहानी को संक्षेप में लिखना  
(b) भूकम्प आने पर जो तबाही हुई उसके बारे में अपने अनुभव लिखना  
(c) दो दिन के अवकाश के लिए पत्र लिखवाना  
(d) मेरा आदर्श विद्यालय पर निबन्ध लिखवाना

उत्तर—(b) भूकम्प आने पर जो तबाही हुई उसके बारे में अपने अनुभव लिखना।

8. उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में किसकी महत्वपूर्ण भूमिका नहीं है?

- (a) अभ्यास-पत्रक (b) प्रश्न-पत्र  
(c) संचार-माध्यम (d) पाठ्य-पुस्तक